नीलाभ स्तेपी

मै और जस्वार दादा दोन के किनारे धूप मे झुलसे टीले पर जगली बेर की छाया मे लेटे है। आकाश मे बादलो की घुघराली शृखला के पास कत्थई चील मडरा रही है। चिडियो की बीट मे चितकबरी बेर की पत्तियो मे हमे कोई राहत नही मिल रही है। कडाके की गर्मी से कान भन्ना रहे है। नीचे मथर-गति मे बहती दोन को या पैरो के पास पडे तरबूज के सूखे-पिचके छिलको को देखकर मुह मे लमीली राल भर आती है और इस राल को थूकने मे भी आलसय आता है।

घाटी मे सूखती झील के पास भेडो का जमघट है। थकी-मादी वे दुबे मटका रही है, धूल के कारण जोर-जोर मे छीक रही है। बध के पास हट्टा-कट्टा मेमना पिछली टागो पर खडा भदमैली भेड के थन चूस रहा है। कभी-कभी वह मा के थन को सिर मे दबाता है, भेड कराह रही है, दोहरी होकर मेंमने को दूध पिला रही है, और मुझे लगता है कि उसकी आखो मे व्यथा का भाव है।

जस्वार दादा मेरे बगल मे बैठे है। बुनी हुई ऊनी कमीज को उतार-कर वह आखे मिचमिचाते हुए जोडो और सिलवटो मे टटोल-टटोलकर कुछ ढूढ रहे है। दादा की उम्र एक कम पूरे सत्तर है। नगी पीठ झुर्रियो के विचित्र बेल-बूटो से ढकी है, खाल के नीचे से पखौडो की पैनी हड्डिया उभरी हुई है, पर स्लेटी भौहोवाली आखे—नीली और युवा है, दृष्टि चपल और पैनी है।

कमीज मे मिले चिल्लड को वह बडी मुश्किल मे अपनी कापती, रूखी उगलियो मे पकडे है, वह उसे सावधानी मे, बडे प्यार मे पकडे हुए है, फिर उसे अपने मे दूर, ज़मीन पर रखकर उन्होने हवा मे सलीब का निशान बनाया और बुदबुदाये

"रेग जा यहा मे दूर, जानवर! शायद जीना चाहता है न?

क्या? वही तो मै कह रहा हू देखो तो सही जी भरकर खून चूस लिया जमीदार की तरह "

कराहकर दादा ने कमीज चढा ली और पीछे की ओर सिर झुकाकर लकडी की बोतल से गट-गट गुनगुना पानी पीने लगे। हर घूट के साथ टेटुआ ऊपर खिसकता। ठोडी से गले तक दो सिलवटे लटकी है, दाढी पर बूदे लुढक रही है, अधखुली केसरी पलको से छनकर धूप लाल हो गयी है।

बोतल मे डाट लगाते हुए उन्होने मेरी ओर तिरछी नजर डाली, नजरे मिलने पर उन्होने होठ चबाये और स्तेपी को देखने लगे। घाटी के उस पार धुध की तरह मरीचिका व्याप्त है, तपती धरती पर बहती हवा मे थाइम के मधु की मादक गध बसी है। दादा ने चुपचाप गडरियो की हकनी एक तरफ उठाकर रखी और धूम्रपान से पीली उगली से इशारा करके बोले

' देख रहे हो इस बीहड के उस पार सफेदो की फुनगिया? तोमी-लिन खानदान की जागीर – तोपोल्योव्का है। वही पास ही मे किसानो की बस्ती तोपोल्योव्का है पहले वे भू-दास थे। मेरा बाप अपनी जिदगी के आखिरी दिन तक जागीरदार का कोचवान रहा। जब मै छोकरा था पिता ने मुझे बताया था कि मालिक येवग्राफ तोमीलिन ने पालतू सारस के बदले मे उन्हे पडोसी जमीदार से लिया था। पिता की मौत के बाद मै उनकी जगह कोचवान का काम करने लगा। मालिक की उम्र तब साठ के करीब थी। बडा हट्टा-कट्टा था। जवानी मे जार की गारद मे था फिर नौकरी छोडकर दोन के इलाके मे बाकी दिन गुजारने आ गया। दोन के इलाके मे उनकी जमीन कज्जाको ने दबा ली और सरकार ने मालिक को सरातोव प्रात मे तीन हजार देस्यातीना* जमीन बख्श दी। यह जमीन वह सरातोव के किसानो को बटाई पर चढाता था और खुद तोपोल्योव्का मे रहता था।

"बडा अजीब आदमी था। हमेशा बढिया ऊनी अगरखा पहनकर और कटार लटकाकर घूमता था। जब कही जाना होता तो जैसे ही हम तोपोल्योव्का के बाहर निकलते हुक्म देता

---

* देस्यातीना – पुरानी रूसी माप। १ देस्यातीना लगभग २.७ एकड के बराबर था। – स०

"'दौड़ा, हरामी!'

"मैं चाबुक़ चलाता। घोड़े सरपट दौड़ने लगते, तेज़ हवा आंखों मे बहते पानी को न सुखा पाती। रास्ता ऊबड़-खाबड़ होता–बसंत की बाढ़ से वह जगह-जगह कट जाता–अगले पहिये तो फटाक से निकल जाते, पर पिछले धम्म से उछलते। आधा मील आगे चले जाते तो मालिक चिल्लाता: 'मोड़ पीछे!' मैं उल्टा मोड़ता और पूरी रफ़्तार से उस कटाव की ओर दौड़ पड़ते... दो-तीन बार उस मरदुए कटाव को पार करते, जब तक कमानी न टूट जाती या बग्घी के पहिये न उखड़ जाते। तब मेरा मालिक बड़बड़ाकर उठता और पैदल चल पड़ता, और मैं पीछे-पीछे लगाम थामे घोड़ों को लिये जाता। मनबहलाव का उसका एक तरीक़ा यह था. जागीर मे हम बाहर निकलते और वह मेरे पास कोचवान की सीट पर आ बैठता, मेरे हाथ से चाबुक छीनकर कहता. 'बीचवाले को दौड़ा!..' मैं बीचवाले घोड़े को दौड़ाता और वह बग़लवाले पर चाबुक चलाता। बग्घी में तीन घोडे होते थे, बग़लों में दोन की ख़ालिस नसल के घोड़े जोते जाते थे, वे साप की तरह बल खाकर ज़मीन पर सिर लटका देते थे।

"और वह उनमें से किसी एक पर चाबुक चलाता, बिचारा झाग से ढक जाता... फिर मालिक कटार निकालता, और झुककर, जैसे बाल को उस्तरे मे काटते है वैसे ही जोत काट देता। घोड़ा दो-एक फर्लांग तक ताबड़तोड दौड़ा जाता, और धम्म मे ढह जाता, नथुनों से ख़ून की धारा फूट पड़ती–हो गया काम तमाम! दूसरे का भी यही हाल होता. बीचवाला घोड़ा भी जब तक निढाल नही हो जाता तब तक दौड़ता रहता, मालिक को क्या परवाह, बस उसका मन बहल जाता, गालो पर लाली छा जाती।

"कभी भी आख़िर तक सवारी में नही गया: या तो बग्घी तुड़वा देता या घोड़ों को मरवा देता, और बाद मे पैदल जाता... बड़े मज़े का था मालिक.. बीती बात हो गयी है, भगवान हमारा फैशला करे.. उसे मेरी लुगाई का चस्का पड़ गया, वह घर में नौकरानी थी। वह नौकरों के कमरे में दौड़ी आती, शमीज़ चिथड़े-चिथड़े होती–फूट-फूटकर रोती। देखता क्या हूं, छातियां उसकी दांतों से कटी हुई हैं, खाल चिथड़ों की तरह लटकी है.. एक बार की बात है रात को मालिक ने मुझे कंपाउंडर को बुलाने भेजा। मैं तो जानता था कि

इशकी कोई जरूरत नही है, समझ गया कि बात क्या है, स्तेपी मे रात घिरने का इतजार करके लौट आया। हवेली मे खलिहान की तरफ से घुसा, घोडो को बाग मे छोडकर मैने चाबुक सभाला और अपनी कोठरी की ओर चल पडा। दरवाजा खोला, दियासलाई जान-बूझकर नही जलायी, सुनता हू कि पलग पर उथल-पुथल हो रही है जैसे ही मेरा मालिक उठा, मैने उसे चाबुक मारा, और मेरे चाबुक के सिरे मे सीमा भरा था मुनता हू कि वह खिडकी की ओर रास्ता बना रहा है, मैने अधेरे मे एक बार और उसके माथे पर वार किया। वह खिडकी से कूदकर भाग गया, मैने लुगाई की थोडी पिटाई की और सो गया। कोई पाचेक दिन बाद हम कस्बे को जा रहे थे, मै बग्घी पर धुस्सा तान रहा था, मालिक ने मेरा चाबुक उठाया और हाथो मे घुमा-घुमाकर उसके सिरे की जाच करने लगा, जब उसने सीसे को टटोला तो पूछने लगा

"'कुत्ते की औलाद, तूने चाबुक मे सीसा क्यो मी रखा है?'

"'आप ही ने तो हुक्म दिया था ' मैने जवाब दिया।

"वह कुछ नही बोला सारे रास्ते पहले कटाव तक दात भीचकर सीटी बजाता रहा, मै पल भर के लिये मुडा तो देखता हू बालो ने माथा ढक रखा है और छज्जेदार टोपी काफी झुकी हुई है

"दो-एक माल बाद उसे फालिज पड गया। उसे उस्त-मेद्वेदित्सा ले जाया गया, ढेरो डाक्टर बुलवाये गये और वह फर्श पर पडा था, शरीर मारा काला पड गया। जेब से नोटो की गड्डिया निकालकर पटक दी, गला फाडकर चिल्लाने लगा 'इलाज करो, हरामियो! सब दे दूगा तुम्हे!

"बस पैसे के साथ भगवान को प्यारा हो गया। बेटा वारिस रह गया, फौजी अफसर था। जब छोटा था तो जिदा पिल्लो की खाल उतारकर उन्हे छोड देता था। बाप पर गया था। पर जब बडा हो गया तो ऐसी आदते छोड दी। लम्बे कद का पतला-दुबला था, बचपन से ही लुगाइयो की तरह उसकी आखो के नीचे काले गड्ढे थे नाक पर सुनहरा चश्मा चढाये रहता था, चश्मा फीतेवाला था। जर्मनो से लडाई के वक्त साइबेरिया मे युद्धबदियो का अफसर था, और तख्ता-पलट के बाद हमारे इलाके मे आ गया। तब तक मेरे पोते बडे हो चुके थे, बेटा तो भगवान को प्यारा हो गया था। बडे पोते

मेम्योन की शादी कर दी थी और अनिकेई अभी मटरगश्ती कर रहा था। बस उनके साथ रहता, अपनी जिंदगी के दिन गुजार रहा था बसंत मे फिर सत्ता पलट गयी। हमारे किसानो ने जवान मालिक को जागीर से निकाल दिया, उसी दिन सभा मे सेम्योन किसानो को जागीरदार की जमीन आपस मे बाटने और उसका माल-असबाब अपने-अपने घर ले जाने के लिये मनाने लगा। बस यही कर दिया गया सामान घरो मे चला गया जमीन बाट दी गयी और जुताई शुरू हो गयी। एक हफ्ते बाद शायद इससे भी जल्दी, अफवाह उडती-उडती पहुची कि जागीरदार कज्जाको के साथ हमारी बस्ती मे मार-काट करने आ रहा है। हमने फौरन दो छकडे स्टेशन पर भेज दिये हथियार लाने के लिये। ईस्टर के हफ्ते लाल गार्ड से हथियार ले आये, तोपोल्योव्का के बाहर खदके खोद ली गयी। जागीरदार के जोहड तक खोद ली।

"उधर देख रहे हो जहा थाइम चारो ओर उग रहा है इस बीहड की दूसरी ओर ही तोपोल्योव्कावाले खदको मे लेट गये। वहा मेरे सेम्योन और अनिकेई भी थे। सुबह मे लुगाइया उन्हे खाना-पीना दे आयी थी जैसे ही सूरज चढा—टीले पर घुडसवार नजर आये। छितरकर उन्होंने चढाई की तैयारी की, तलवारे चमकने लगी। खलिहान मे मैने देखा कि आगेवाले ने जो सफेद घोडे पर सवार था तलवार हिलायी और घुडसवार शोर-शराबे के साथ टीले से नीचे आने लगे। सफेद घोडे की चाल से मैने जागीरदार के घोडे को पहचान लिया और घोडे से सवार को भी पहचान लिया दो बार हमारे लोगो ने उन्हे खदेड दिया, पर तीसरी बार कज्जाको ने घूमकर पीछे से हमला किया, चालाकी से काम लेकर और ऐसी मार-काट हुई दिन ढलते लडाई खत्म हो गयी। मै घर से बाहर निकला, देखता हू घुडसवार हवेली की ओर लोगो के झुड को हाककर ले जा रहे है। मैने लाठी उठायी और उस ओर चल पडा।

"अहाते मे हमारे तोपोल्योव्कावाले झुड मे सिमटकर खडे थे, वैसे ही जैसे ये भेडे। चारो ओर कज्जाक थे मैने पास जाकर पूछा

" भाइयो, मेरे पोते कहा है?'

"दोनो ने मुझे भीड से पुकारा। हमने आपस मे कुछ देर बातचीत की, देखता हू कि जागीरदार ड्योढी से निकला। मुझे देखकर चिल्लाया

" 'अरे, यह तुम हो जखार दादा ?'

" 'जी हुजूर !'

" 'क्यो आये हो ?'

"ड्योढी के पास जाकर मै घुटनो के बल खडा हो गया।

" 'पोतो को मुसीबत मे बचाने आया हू। मालिक, दया करो ! जिदगी भर आपके पिता जी की सेवा की, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे, मालिक, मेरी लगन को याद करो मेरे बुढापे का लिहाज करो ! '

"वह बोला

" 'देखो, जखार दादा, मै अपने पिता जी की सेवा के लिये तुम्हारा बहुत लिहाज करता हू, पर तुम्हारे पोतो को नही छोड सकता। वे असली बागी है। दादा समझा लो अपने मन को।'

' मै उसकी टागो से लिपट गया, ड्योढी मे रेगने लगा।

" 'मालिक, दया कर ! मेरे प्यारे, याद कर कैसे दादा जखार तेरी खिदमत करता था, रहम कर, मेरे सेम्योन का तो दूधपीता बच्चा है !'

"उसने खुशबूदार सिगरेट सुलगायी, धुआ छोडकर बोला

' 'जा, उन हरामजादो से कह कि मेरे कमरे मे आये, अगर माफी मागेगे तो ठीक है, पिता जी की याद की खातिर उन्हे कोडे लगवाकर अपने दस्ते मे भरती कर लूगा। क्या पता, अपनी लगन से वे अपने शर्मनाक कुसूर का पछतावा कर ले।

"मै दौडा-दौडा अहाते मे गया, पोतो को बतलाया और आस्तीनो से पकडकर उन्हे खीचने लगा

' 'जाओ, बेवकूफो, जब तक माफ न कर दे जमीन पर लेटे रहना !'

"सेम्योन ने सिर तक नही उठाया। उकडू बैठा तिनके से मिट्टी कुरेदता रहा। अनिकेई मुझे घूरता रहा और फिर चिल्लाकर बोला

" जा, अपने मालिक से कह दे कि जखार दादा जिदगी भर घुटनो के बल रेगता रहा, और उसका बेटा भी, पर पोते अब यह नही चाहते। जाओ यही बता दो उसे !'

" 'नही जायेगा, कुतिया के पिल्ले ?'

" 'नही जाऊगा !'

" 'तेरे लिये, हरामी, जीने-मरने का मोल कौड़ी भर का है पर सेम्योन को कहां फंसा रहा है? अपनी लुगाई और बच्चे को किस पर छोड़ेगा?'

"देखता हूं कि सेम्योन के हाथ कांप उठे, चुपचाप तिनके से ज़मीन कुरेदता जा रहा है, न जाने क्या ढूंढ़ रहा है। बैल की तरह चुप है।

" 'जाओ दादा, हमें मत सताओ,' अनिकेई ने मिन्नत की।

" 'नहीं जाऊंगा, शैतान की दुम! अगर कुछ हो गया तो सेम्योन की अनीमिया न जाने क्या कर बैठे!..'

"सेम्योन के हाथ का तिनका चट से टूट गया।

"मैं इंतज़ार करने लगा। पर वे फिर चुप।

" 'सेम्योन प्यारे, होश में आ, मेरे पालनहार! जा मालिक के पास।"

" 'आ गये होश में! नही जायेंगे! जा तू रेंगकर!' गुस्से में अनिकेई बोला।

"मैंने कहा:

" 'तू मुझे यह उलाहना दे रहा है कि जागीरदार के सामने मैंने घुटने टेके? तो क्या हुआ, मैं बुड्ढा हूं, मां की चूची की जगह मैंने जागीरदार का चाबुक चूसा .. अपने पोतों के सामने घुटने टेकते हुए भी मैं नही शर्माऊंगा।'

"घुटनों के बल खड़ा हो गया, ज़मीन पर सिर पटक-पटककर बिनती करने लगा। किसानों ने मुंह फेर लिया मानो कुछ देख ही न रहे हो।

" 'जाओ दादा ... जाओ, नही तो मार डालूंगा!' अनिकेई चिल्लाया, उसके होंठों पर झाग आ गया, आंखों में फंदे में फंसे भेड़िये की तरह वहशी चमक थी।

"मैं उल्टे पांव जागीरदार के पास गया। उसकी टांगों से लिपट गया, हाथ जड़ हो गये, मुंह से कोई बोल न निकले। उसने पूछा:

" 'कहां है पोते?'

" 'मालिक, डरते हैं ...'

" 'अच्छा, डरते हैं ...' और कुछ नही बोला। बूट से सीधे मेरे मुंह में ठोकर मारी और ड्योढ़ी में चला गया।"

ज़ख़ार दादा हांफने लगे, पल भर के लिये उनका चेहरा पिचककर सफ़ेद पड़ गया ; बड़ी कठिनाई से उन्होंने बुढ़ापे की रुलाई को दबाया। सूखे होंठों को हथेली से पोंछकर उन्होंने मुंह मोड़ लिया। दूरी पर, झील के उस पार डैने तिरछे फैलाकर चील घास से टकरायी और झपट्टा मारकर उसने सफ़ेद छातीवाली सोहन चिड़िया को हवा में उठाया। बर्फ़ के गालों की तरह पर बिखर गये, घास पर पड़े वे ऐसे चमक रहे थे कि उनको देखकर आंखों में असहनीय चौंध होती। ज़ख़ार दादा ने नाक सिनकी और उंगलियों को क़मीज़ के किनारे से पोंछकर फिर बताने लगे :

"मैं भी पीछे-पीछे ड्योढ़ी पर चला गया, देखता हूं कि सेम्योन की अनीसिया बच्चे को गोद मे लिये दौड़ी आ रही है। इस चील की तरह ही वह पति से टकरायी और उसकी बांहों मे लटक गयी...

"जागीरदार ने सार्जेंट-मेजर को बुलाया, सेम्योन और अनिकेई की ओर इशारा किया। सार्जेंट-मेजर और छह कज़्ज़ाक उन्हें पकडकर हवेली के पिछवाडे में ले चले। मैं पीछे-पीछे चल पड़ा और अनीसिया बच्चे को अहाते में पटककर जागीरदार के पीछे-पीछे रेंगने लगी। सेम्योन सबसे आगे तेज़ी से चल रहा था, अस्तबल के पास जाकर वह बैठ गया।

"'तू क्या कर रहा है?' जागीरदार ने पूछा।

"'बूट काट रहे है, नही सहा जा रहा।'—और मुस्कराने लगा।

"बूट उतारकर मुझे देते हुए बोला :

"'दादा, जी भरकर पहनो। दोहरे तलवे के है, अच्छी हालत में है।'

"मैंने बूट ले लिये और फिर चल पड़े। चहारदीवारी के पास पहुंचे। टहनियों से बनी बाड़ के पास उन्हे खड़ा कर दिया। कज़्ज़ाक बंदूक़ों में गोलियां भरने लगे, जागीरदार पास ही में खड़ा छोटी-सी कैंची से नाख़ून काट रहा था, उसका हाथ गोरा-चिट्टा था। मै उससे बोला :

"'मालिक, इन्हें कपड़े उतारने दीजिये। कपड़े अच्छे-ख़ासे हैं, हम ग़रीबों के काम आ जायेंगे।'

"'उतारने दो।'

"अनिकेई ने पतलून उतारी, उसे उलटा करके बाड़ के खूंटे पर

टाग दिया। जेब से तबाकू की थैली निकाली, सिगरेट जलायी, पैर चौडे करके धुए के छल्ले छोडने लगा, बाड के पार थूकने लगा मेम्योन ने पूरे कपडे उतार डाले, सूती जाघिया तक, पर टोपी उतारना भूल गया – शायद मति मारी गयी मेरे शरीर मे कभी झुरझुरी फैल जाती, कभी आग-सी लगने लगती। अपना सिर छूता तो चश्मे के पानी की तरह ठडा पसीना बहता मिलता देखता हू – दोनो पास-पास खडे है सेम्योन की पूरी छाती घने बालो से ढकी थी, नग-धडग, पर सिर पर टोपी है अनीसिया अपने पति को बिल्कुल नगा, सिर्फ टोपी पहने देखकर, दौडकर उससे चिपट गयी जैसे बेल पेड से लिपट जाती है। सेम्योन उसे धक्का देकर हटाने लगा।

"'जा यहा से, छिनाल! होश मे आ, यहा इतने लोग है! क्या सूझी है तुझे, देखती नही कि मै एकदम नगा हू शर्म आती है '

"अनीसिया ने अपने बाल बिखेर लिये और बस यही चिल्लाने लगी

"'हम दोनो को गोली मार डालो!

' जागीरदार न कैची जेब मे रखकर पूछा

"'मारू गोली?'

"'मार पापी! '

"जागीरदार से इस तरह बोली!

' बाध दो इसे खसम के साथ, उसने हुक्म दिया।

"अनीसिया चेती और पीछे हटने लगी पर बात बिगड चुकी थी। कज्जाको ने हसते हुए उसे बागडोर से सेम्योन के साथ बाध दिया पगली, जमीन पर ढह गयी और घरवाले को भी साथ गिरा दिया जागीरदार ने पास जाकर दात भीचकर पूछा

"'क्या बच्चे की खातिर माफी-वाफी नही मागना चाहता?'

"'माग लूगा,' सेम्योन कराहकर बोला।

''कोई बात नही, अब माग लेना भगवान से मुझसे मागने मे देर कर दी! '

"जमीन पर पडे-पडे ही दोनो को गोली मार दी अनिकेई गोली लगने पर लडखडाया पर फौरन गिरा नही। पहले घुटनो पर गिरा और फिर झटके से पीछे लेट गया, मुह ऊपर था। जागीरदार

ने उसके पास जाकर बड़े स्नेह से पूछा :

" 'जीना चाहता है? अगर चाहता है तो माफ़ी मांग। चल, पचास कोड़े लगवाकर मोर्चे पर भेज दूंगा।'

"अनिकेई ने मुंह में थूक भरा पर थूकने की शक्ति नही बची थी, थूक बस दाढ़ी पर बहकर रह गया... गुस्मे मे चेहरा फक पड़ गया, पर कर क्या पाता, तीन गोलियां उसे बींध चुकी थी...

" 'इसे सड़क पर फेंक दो!' जागीरदार ने आदेश दिया।

"कज़्ज़ाक उसे घमीटकर ले गये और बाड़ के ऊपर मे सडक पर फेंक दिया। उसी समय तोपोल्योव्का मे कज़्ज़ाकों का रिसाला क़स्बे को जा रहा था, उनके साथ दो तोपें भी थी। जागीरदार मुर्ग़े की तरह फुदककर बाड़ पर चढ़ गया और ज़ोर से चिल्लाया :

" 'तोपवाले, घोडो को सरपट दौड़ाते ले जाओ, बचाकर मत जाना! ..'

"मेरे रोंगटे खड़े हो गये। हाथों में सेम्योन के कपड़े और बूट पकडे था, पर टांगें मुड़ी जा रही थी... घोडों में दैवी शक्ति होती है, एक ने भी अनिकेई पर पैर नही रखा, कूदकर उसे पार कर रहे थे... मैं टहनियों की बाड से चिपक गया, आंखे नहीं बंद कर पा रहा था, मुंह मूख गया था .. तोप के पहिये अनिकेई की टांगों पर चढ़े.. वे कुरकुरायी जैसे दांतों में पापड़, तिनको की तरह कुचल गयी... सोचा अनिकेई भयंकर पीड़ा से मर जायेगा, पर वह चिल्लाया तक नही, उफ़ तक न निकली उसके मुंह से सिर पूरे ज़ोर से ज़मीन से सटाये पड़ा हुआ था, मुट्ठी भर-भरकर सडक की मिट्टी मुह में ठूंस रहा था... मिट्टी चबाते हुए जागीरदार को अपलक देख रहा था और आंखें उसकी स्पष्ट, निर्मल थी, आकाश की तरह...

"जागीरदार तोमीलिन ने उस दिन बत्तीस जनों को गोलियों से भुनवा दिया। बस अकेला अनिकेई ही ज़िंदा बच गया अपने गर्व के कारण..."

ज़खार दादा बड़ी देर तक बोतल से गटगट पानी पीते रहे। बदरंग होंठों को पोंछकर उन्होंने अनमने ढंग से क़िस्सा पूरा किया :

"गयी-बीती बात हो चुकी है। बस खंदक़ें ही बची हैं जिनमें हमारे किसानों ने अपने लिये ज़मीन जीती। उनमें अब घास और झाड़ियां उगती हैं... अनिकेई के पैर काट दिये गये, अब वह हाथों

के बल चलता है धड को जमीन पर घसीट-घसीटकर। देखने मे बडा हसमुख है, सेम्योन के छोकरे के साथ दरवाजे की चौखट मे रोज कद नापता है। छोकरा तो उससे लम्बा हो ही जायेगा सर्दियो मे गली मे निकल जाता, लोग ढोरो को नदी पर पानी पिलाने के लिये हाकते और वह हाथ उठाकर रास्ने मे बैठ जाता बैल बिदककर नदी पर जमी बर्फ पर भाग जाते, वहा फिसल-फिसलकर बेहाल हो जाते और वह हसता रहता एक बार की बात है बसत मे हमारे कम्यून का ट्रैक्टर खेत जोत रहा था, बस वह भी चल पडा उस तरफ। मै वही पास मे भेडे चरा रहा था। देखता क्या हू कि मेरा अनिकेई जुते खेत मे रेग रहा है। सोचने लगा कि वह क्या करना चाहता है? और देखता हू कि अनिकेई ने चारो ओर नजर दौडायी, आसपास कोई उसे दिखाई नही दिया, उसने जमीन से अपना चेहरा सटा लिया, हल के फाल से पलटे मिट्टी के लौदे मे कसकर लिपट गया, उसे सहलाने, चूमने लगा उसे पच्चीसवा लग गया है, पर जमीन कभी नही जोत पायेगा बस यही दुख उसे सताता है "

धुधली साझ मे नीलाभ स्तेपी ऊघ रही थी, थाइम के झडते फूलो से मधुमक्खिया उस दिन के लिये आखिरी बार पराग बटोर रही थी।

रुपहली और घनी फैदर घास घमड के साथ अपनी कलगीदार बालिया हिला रही थी। भेडो का रेवड तोपोल्योव्का की ओर ढलान पर उतर रहा था। जख्वार दादा हकनी का सहारा लेते हुए चुपचाप चल रहे थे। धूल से ढके रास्ते पर चिन्हो की रेखाए दिखाई दे रही थी एक भेडिये का था—कदम-ब-कदम, फैले पजे, दूसरा—तोपोल्योव्का के ट्रैक्टर के धारीदार पहियो का।

जहा कच्चा रास्ता पुराने जमाने के, घास-फूस ढके राजमार्ग से मिलता है, चिन्ह भिन्न दिशाओ मे जा रहे थे। भेडिये के जगली घास और काटेदार झाडियो की दुर्गम हरियाली मे डूबे बीहडो की ओर मुड गये और रास्ते पर मिट्टी के तेल की बू छोडता एक गहरा और अनवरत चिन्ह रह गया।